स्वयं सहायता समूह........

आत्मनिर्भरता की ओर

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

गीता की ननद कई महीने बाद मायके लौटती है. गीता उसके ठाठबाट देखकर हैरान रह जाती है.
अरे वाह! नंदी बहन, तुम तो पहचान में ही नहीं आ रहीं. क्या ठाठ हैं! सारे रंगढंग बदल गए हैं.
पर तुम तो वैसी की वैसी ही हो.
हां जीजी, सच तो यह है कि बस किसी तरह गुजरबसर हो रहा है.
कामधंधा मंदा है महाजन का सूद और खर्च है कि बढ़ता ही जा रहा है.

पर तुम बताओ कोई अलादीन का चिराग हाथ लग गया है क्या?
अरे नहीं हमारे गांव में यूनियन बैंक के मैनेजर और एक स्वंयसेवक आए थे. उन्होंने समझाया कि कैसे हम अपनी सहायता स्वंय कर सकते हैं.
आज हममें से अधिकतर अच्छी स्थिति में हैं और महाजन के आगे हाथ फैलाए बिना इज्जत की रोटी कमा रहे हैं.
अरे वाह!
नंदी बहन हमें भी बताओ कि हम **अपनी सहायता स्वयं** कैसे कर सकते हैं?

अरी यह तो बहुत आसान है. सबसे पहले तुम अपने जैसे परिवारों की महिलाओं को एकत्रित करो
अगर इनमें से कोई बड़ी बुजुर्ग है, या ऐसी जिसकी बात सभी मानते हैं तो और भी अच्छा है.
गीता ने घर-घर घूमकर अपने जैसे आर्थिक व सामाजिक स्थिति वाली कुछ महिलाओं को एकत्रित कर लिया. इधर नंदी ने बैंक मैनेजर व स्वयं सेवी संस्था प्रतिनिधि को बुला लिया.
आज मैनेजर साहब यह बताने आए हैं कि कैसे हम स्वयं सहायता समूह बनाकर अपनी सहायता कैसे कर सकते हैं.
क्या आप सभी के परिवारों की सामाजिक व माली हालत एक जैसी है?
जी हां.

और आप सभी अपनी आर्थिक समस्याओं से छुटकारा चाहते हैं.
मैं बहुत अच्छी टोकरी बनाना जानती हूं. साहब थोडे पैसे मिल जाएं तो काम शुरू कर सकती हूं.
पर महाजन भी कर्जा नहीं देता कहता है कुछ गिरवी रखो.
नहीं
शादी से पहले मैं पत्ते के दोने, पत्तल बनाने के कारखाने में काम करती थी. कुछ पैसा मिल जाए तो मैं अपना काम कर सकती हूं.
मैं मायके में अचार, पापड़ बनाने का काम करती थी. थोड़ी मदद मिल जाए तो मैं अपना धंधा कर सकती हूं.

हां, पर हमारी सहायता कोई नहीं करता. हम ऐसे कैसे ऊपर उठ सकते हैं.
अच्छा यह बताओ जब किसी के खेत में जानवर घुस आए, या आग लग जाए तो आप क्या करते हैं?
हम सब मिलकर उसे खदेड़ देते हैं. आग बुझा देते हैं.
ठीक कहती हो ताई.
एकता में बहुत शक्ति है. मिलकर एक दूसरे की सहायता करना ही स्वयं सहायता समूह है.
वाह!

ऊपरवाला भी उसी की मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करता है.
हां पर कैसे?
आप सभी महिलाएं हर महीने कुछ न कुछ बचत कर ही सकती हैं?
मैं चार सौ रूपये बचा सकती हूं.
हां मैं भी
पर मैं तो इतना नहीं कर सकती!
मैं पांच सौ.
कोई बात नहीं. बूंद-बूंद से घड़ा भर जाता है. अगर आप दस-पंद्रह महिलाएं मिलकर एक निश्चित रकम हर महीने जमा करें तो बड़ी राशी जमा हो सकती है.
₹

जरूरत पड़ने पर वह पैसा किसी सदस्य को ब्याज पर दिया जा सकता है.
उस पैसे से वह कुछ कामधंधा कर सकती है और किश्तों में उसे लौटा सकती है.
अब मैं अच्छी और ज्यादा टोकरियां बना सकती हूं.
बिल्कुल इसी प्रकार अगले महीने में किसी और सदस्य की मदद करी जा सकती है.
वाह! सहायता भी और हमारी बचत पर कमाई भी.
पर इस सबका हिसाब कौन रखेगा?

आप स्वयं या फिर आप में से कोई भी जो थोड़ा पढ़ा लिखा हो या फिर कोई स्वयं सेवक.
पर भईया हमारा कामकाज देखेगा कौन, बैंक?
नहीं, यह काम आपमें से दो चुने हुए प्रतिनिधि करेंगे.
कहीं कोई गड़बड़ या धोखाधड़ी तो न होगी?
नहीं सारा काम आपके सामने होगा और आप ही लोग करेंगे. एक दम शीशे की तरह साफ.
फिर ठीक है.
पर आप हमारे लिए क्या करेंगे?

हम आपके समूह का खाता बैंक में खोलेंगे, जिसमें जमा पर आपको चारस्का ब्याज भी मिलेगा. पर पहले 6 महीने तक आपको समूह का कामकाज ठीक से चलाना होगा.
वाह! यह स्वयं सहायता समूह तो हमारा अपना छोटा सा बैंक हो गया.
लेकिन साहब, हमारी छोटी सी बचत की रकम में से हम कितना कर्ज देंगे और क्या कारोबार कर पायेंगे?
यह तो बहुत सुंदर विचार है.
अच्छा पूछा ताई. जरूरत पड़ने पर बैंक समूह की कुल जमापूंजी का 1 से 5 गुणा तक ऋण भी दे सकता है, वह भी रियायती ब्याज दर पर
पर इस विचार को समूह में बदलकर अपनी सहायता आपको ही करनी है.

पर क्या यह सब हमसे हो पाएगा?
क्यों नहीं.
नंदी बहन सामने बैठी हैं. दो वर्ष पहले इसने समूह बनाया था. आज उसके गांव में ऐसे तीन-तीन समूह हैं. और आसपास के गांव में पूरे दस. सभी बहुत अच्छा काम कर रहे हैं.
मैं आपकी सहायता करूंगी और फिर जरूरत पड़ने पर **यूनियन बैंक** है न.
वाह!
एक वर्ष बाद
कहो गीताबेन आपका चेतना स्वयं सहायता समूह कैसा चल रहा है?
जबसे यूनियन बैंक ने सहायता दी है. हम सब सदस्य खुशहाल हो गए हैं.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

आलोक भार्गव द्वारा रेखांकित व यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई के वित्तीय समावेशन विभाग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग के समन्वयन से प्रकाशित.

Onlooker Press - 2218 3544 - info@onlookerpress.com